RNI MAHMAR
36829-2010

ISSN - 2229-4929

Peer Reviewed

Akshar Wangmay

International Research Journal

UGC-CARE LISTED

Folk Literature & Folk Media

FEBRUARY 2020

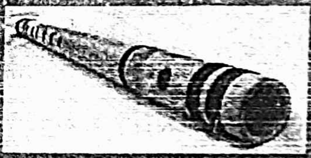

Executive Editor : Dr. Subash Nikam

Principal,
Mahatma Gandhi Vidymandir's
Karmaveer Bhausaheb Hiray
Arts, Science and Commerce College
Nimgaon, Tal. Malegaon Dist. Nasik (MS)

Co-Editor : Prof. Arjun G. Nerkar

Chief Editor : Dr. Nanasaheb Suryawanshi

Address : 'Pranav', Rukmenagar
Thodga Road, Ahmadpur Dist. Latur 413515

INDEX

No.	Title of the Paper / Authors	Page No.
1	लोकसाहित्य में लोकगीत डॉ. योगिता हिरे	6 - 8
2	आदिवासी लोक सांस्कृति के संदर्भ में आदिवासी जनजीवन डॉ.पंडित बन्ने	9 - 14
3	आदिवासी लोकसाहित्य और समाज जीवन डॉ. योगिता दत्तात्रय घुमरे (उशिर)	15 - 17
4	गुजरात की लोकधारा भवाई : एक संक्षिप्त अध्ययन डॉ. गीता परमार	18 - 21
5	भारतीय साहित्य : लोकसंस्कृति एवं लोकजीवन डॉ.नवनाथ गाड़ेकर	22 - 26
6	बंजारों की लोकसंस्कृति और लोकगीत प्रा.डॉ.व्ही.जी.राठोड	27 - 29
7	लोकगीत : 'जंगल के गीत' उपन्यास के विशेष संदर्भ में प्रा. हर्षल गोरख बच्छाव, डॉ.अनिता नेरे (भामरे)	30 - 34
8	लोकसाहित्य का इतिहास प्रा. डॉ. जाधव के. के.	35 -38
9	लोकसाहित्य के प्रकार डॉ. जालिंदर इंगले	39 - 41
10	लोकसाहित्य विमर्श : खानदेश की अहिराणी बोली प्रा. काळे मिनाक्षी बबनराव	42- 47
11	लोक साहित्य और फिल्म – डॉ. अनंत केदारे	48 - 52
12	लोकसाहित्य का स्वरूप एवं विकास प्रा. कैलास काशिनाथ बच्छाव	53 - 55

आदिवासी लोकसाहित्य और समाज जीवन

डॉ. योगिता दत्तात्रय घुमरे (उशिर)
श्रीमती पुष्पाताई हिरे कला,विज्ञान व वाणिज्य,महिला महाविद्यालय, मालेगांव कैम्प,
मालेगांव, जि. नाशिक. (हिन्दी विभाग)

प्रस्तावना :

साहित्य समाज का दर्पण है, और परिवर्तन का माध्यम भी है। साहित्य के माध्यम से ही संघर्ष किया जा सकता है। हिन्दी का अभिजात साहित्य का स्वरूप तथा उसकी विशेषताएँ आदिवासी साहित्य से भिन्न है। आदिवासी लोकसाहित्य समाज का एक ऐसा दर्पण है जिनमे आदिम संस्कृति रीति–रिवाज, रूढी परंपराएँ एवं संस्कार प्रतिबिंबित हुए है। सदियों से आदिवासियों का साहित्य अलिखित रहा है, लेकिन पिढी–दर–पिढी लोकगीत, नृत्य, कहावतो व्दारा वह जीवित भी है। आदिवासियों का लोकसाहित्य मौखिक है क्योंकी वह अधिकतर लोकगाथा, लोकगीत या लोक कथाओं में पाया जाता है।

उत्सव पर्व :

आदिवासी जन समाज उत्सवप्रिय है। उत्सव मनाना इनके जीवन का महत्वपूर्ण अंग है। गोंड जाति में मडई इस उत्सव का महत्व है। इस उत्सव में आदिवासी अपने दूर रह रहे बांधवों से भेंट कर लेते है। सालभर के नमक, तेल जैसी जरूरत की चीजों को खरिद लेते है। मध्यप्रदेश की आदिवासी जातियों में 'भगोरिया' यह उत्सव मनाया जाता है, उत्सव होलिका दहन के सात दिन पूर्व शुरू होता है। पूर्ण क्षेत्र में वह धुमधम से मनाया जाता है। वनस्थली में रहने वाले 'हो' समाज के लोग रूढिग्रस्त एवं अंधविश्वासी भी होते है।। इस समाज के लोक देवी देवताओं को प्रसन्न रखने के लिए पशुओं की बली भी चढाते है। मध्यप्रदेश के आदिवासियों में गुदना और गुदवाने की प्रथा बच्चों से लेकर बुढो तक है। शरीर हा हर एक अंग वे गुदवाते है। आदिवासी संस्कृ तिमे श्रम को महत्व है, आदिवासियों के लिए श्रम वही जो आनंद, उमंग प्रदान करता है। वर्षभर निरंतर श्रम करके जीवन को उल्लास, हर्ष के साथ बिताना आदिवासियों को खूब आता है। इन्हे रोपनी, कटनी, दौनी, छप्पर, छाने से लेकर शादी–ब्याह के अवसर पर मडवा बनाने मे भी आनंद मिलता है। छोटे आदिवासी बच्चे बचपन से ही श्रम आधारीत खेल खेलते है। झारखण्ड में 'काम नून कि चाम नून' की अवधारणा है अर्थात जो श्रम करता है, वही सुंदर है।"[१] अनेक आदिवासियों को बॉस का सामान, कपडे बुनने का हुनर ज्ञात है। आलोक चौथी राम यादव ने ठीक ही लिखा है–"सच बात तो यह है कि यदि लोक संस्कृति और लोककलाएँ आज जीवित है, तो उसका मूल श्रेय दलितों और खास तौर पर आदिवासियों को जाता है। उनका जीवन, उनका साहित्य और लोककलाएँ, सभी मौलिक है जो किसी अनुवादक की मोहताज नहीं है।"[२]

लोकनृत्य :

आदिवासी समाज में नृत्य का महत्वपूर्ण स्थान है। नृत्य के साथ लोक वाद्यों, जैसे – तबला, ढोलक, थाली, झाँझ, बॉसुरी आदि का प्रयोग भी किया जाता है। छत्तीसगढ का प्रमुख नृत्य 'सैला' डंडों की सहायता से किया जाता है।'बैगा आदिवासियों मे यह लोकनृत्य विशेष रूप से प्रसिध्द है। 'भगोरिया' यह लोक नृत्य भील आदिवासियों में अधिक प्रसिध्द है इसका प्रमुख वाद्य मॉदर है। इन नृत्यों को रंगबिरंगे पोशाखे और आभुषण पहनकर किया जाता है। ढोलक, तबला, थाली, बॉसुरी आदि वाद्यों के साथ नृत्य कि ा जाता है। इन नृत्यों में आदिवासी संपूर्ण तन–मन लगाकर नाचते है। इनके गीतों मे शृंगार गीत, प्रेमगीत, गाए जाते है। और इन गीतों पर नृत्य करते है। आदिवासी इलाके में भौतिक साधनों की भले ही कमी हो लेकिन जीवन का असली सुख वे अपनी परंपरा ओं मे ढूंढ लेते है। नृत्य, संगीत को बरकरार रखते है। छत्तीसगढ में गोंड जनजाति के लोकनृत्य और संगीत के शौकीन है, और यह नृत्य आंचलिक जनजीवन का एक जरूरी हिस्सा है। इनके कई गीत फसल कटाई के है, इन नृत्यों में स्त्री–पुरूष दोनों सहभागी होते है। होली के अवसर पर तो आदिवासीयों की मस्ती देखने लायक होती है "डॉग जिले के सभी लोग इस त्यौहार का इंतजार करते है, मेले या होली का उत्सव यहाँ के लोगों मे आनंद, उल्लास भर देता है।"[३] उत्सवप्रिय और नृत्यप्रिय आदिवासियों का लोक साहित्य स्पष्ट होता है। "उराव लोग पेकी नृत्य, गोंड होली, दीवाली

रामनवमी, संथाल गोपूजन पर्व, दण्डनी माडिया भीमल पांडुम, महुआ पंडुम, बीज पांडुम, इकमा पांडुम, कोयता पांडुम पर्व, लहुली नैना देवी मेला, पहाडी मेला, माडिया गोंड नवी पांडुम, पोले, दसरा, मुण्डा जन माहे परब, फागो परब, सरहुल पर्व, करम सिजोबागा, संथाली लोक डोन आदि उत्सव पर्व मनाकर आनंद की प्राप्ति करते है।''[४]

लोक गीत :

''आदिवासियों में अनेक अवसरों पर लोकगीत गाए जाते है। आदिवासी जीवन की झॉकी लोकगीत में है। मानवीय जीवन का एक भी कोना ऐसा नहीं जो लोक गीतों में व्यक्त नहीं हुआ''[५] पीढी दर पीढी मौखिक गीतों की परंपरा हस्तान्तरित हो रही है। अनेक लोकगीतों व्दारा आदिवासियों का भावविश्व झालकता है। फसल कटाई के समय, विवाह मृतक संस्कार पर, देवी–देवताओं को प्रसन्न कराने के लिए, शरीर पर गुदवाते समय, त्यौहार पर्वोपर प्रकृति की पूजा करते वक्त अनेक लोक गीतो को गाया जाता है। यह लोकगीत आदिवासियों के प्राण होते है, वे उनका मन बहलाने का काम करते है। प्रेमगीत प्रकृति गीत, नृत्य गीत, उत्सव गीत, घोटुल गीत, आदि लोकगीत आदिवासियों की पहचान है।

लोक कथा :

आदिवासी जनजातियों में अनेक लोक कथाएँ प्रचलित है। लोकगीतों की तरह लोककथाओं की लोकप्रियता प्रचूर मात्रा में पायी जाती है। बैगा आदिवासियों मे नृत्य संबंधी एक कथा प्रचलित है– ''बैगा लोगों के अनुसार एक काल में उनके पूर्वजों ने चांदनी रात मे शेर को नगारा तथा चीते को दुदुंभ बजाते हुए और इसी तालपर मोर को नाचते हुए देखा था। इसी काल से अनुकरण करके पूर्वज भी नाचते थे, इस प्रकार नृत्य कला का विकास हुआ।''[६] इस तरह की अनेक लोक कथाओं का प्रचलन आदिवासी समाज में है। लोक जीवन के दर्शन इन कथाओं में होतं है। एलविन कहते है– ''आदिवासियों की कहानियों के जरिए हम उनके नजदीक जाते है। उनका भोलापन, उनके संस्कार देखने को मिलते है।''[७] विजय चौरसिया के शब्दों में ''लोक कथा आदिम जनजाति की धरोहर है। कथाओं में समाज के स्वरूप, संगठन, सामाजिक आस्था के दर्शन होते है।''[८] आदिवासियों में शिकार कथा, गोंदने की कथा, चुडैल कथा, देवी देवताओं की कथा, प्रकृतिकी कथा, आत्माओं की कथा, भूत–पिशाच्च डायनों की कथा, राजा–राणी की कथा, नदी–तालाबों की कथा आदि कई लोक कथाएँ प्रसिध्द है। इन कथाओं मे भोले भाले आदिवासियों का लोकजीवन, मानसिकता, भावूकता तथा अंधविश्वास का दर्शन होता है।

निष्कर्ष :

आदिवासी लोकसाहित्य समाज का एक ऐसा दर्पण है, जिसमें आदिम जनजीवन के दर्शन, रीति रिवाज एवं संस्कार के प्रतिबिम्ब दिखाई देते है, आदिवासी समाज में सामुहिकता दिखाई देती है। उत्सव, पर्व, विवाह, मृतक संस्कार तीज–त्योहार आदि प्रचुर मात्रा मे मनाए जाते है। लोकनृत्य, लोकगीत, लोककथाएँ इनके व्दारा समस्त आदिवासी जीवन झलकता है। जल, जंगल और जमीन पर अधिकार पानेवाले आदिवासियों का लोक साहित्य सांस्कृतिक विरासत को स्पष्ट करता है। जनजातीय लोक साहित्य में जो अभिव्यक्ति उनके जीवन और जीवन प्रक्रिया गरीबी–भूख और विवशता से जुडी हुई है वह भी सभ्य एवं शिष्ट कहे जानेवाले समाज के लिए उनकी और मुखातिब होने और जनजातिय समाज के प्रति संवेदनात्मक भाव अपने के लिए प्रेरित

और आकर्षित करती है। जनजातिय लोकगीतों में जो स्वाभाविक निश्छलता, निराभिमानता और प्रकृतिसे जुझने तथा साहसपूर्ण जीवन जीने की उत्कट अभिलाषा दिखायी देती है।

संदर्भ :

१. समकालीन विमर्श, विविध परिदृश्य, पृ. १६ – संपादक डॉ. श्रवण कुमार मीणा

२. खत्म होती हुई एक नस्ल, पृ.३३ – हरिराम मीणा

३. समकालीन विमर्श, विविध परिदृश्य, पृ. ६० – संपादक डॉ. श्रवण कुमार मीणा

४. हिन्दी के ऑंचलिक उपन्यासों में आदिवासी जनजीवन पृ.२० – डॉ. भरत सगरे

५. मगधी भाषा और साहित्य – पृ. १४१ – संपत्ति अर्थानी

६. लोकसाहित्य समाज और संस्कृति – पृ. ११२ – डॉ. बापूराव देसाई

७. महाकोशल अंचल की लोककथाएँ, प्राक्कथन से – वेरियर एलविन

८. गोंडवाना की लोककथाएँ, पृ.०५ – विजय चौरसिया